Vol 7 Issue 2 Nov 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2017

वैद्य गुरूदत के उपन्यासों में राजनैतिक चेतना

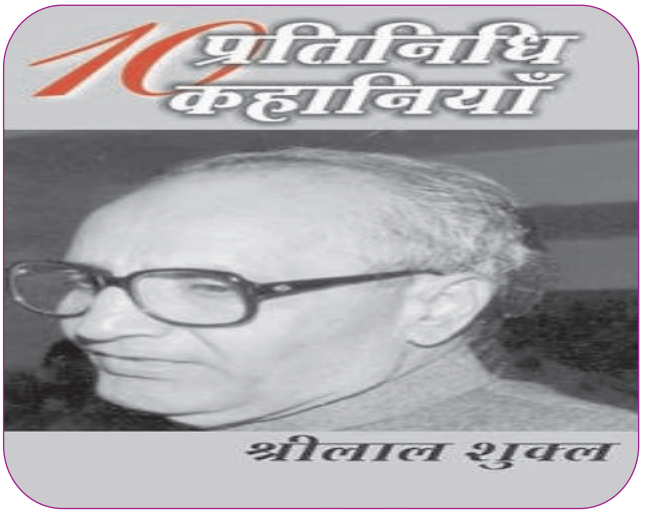

Dr. Pinki Devi
VPO Salouni, Teh Barsar , Hamirpur.

प्रस्तावना–

उपन्यास साहित्य को स्थायी महत्व की रचनाएं प्रदान करने वाले महान मनीषी गुरूदतजी का जन्म लाहौर के एक सामान्य परिवार में ८ दिसम्बर १८९४ को हुआ था। परिवार की आर्थिक स्थिति साधारण मध्यमवर्ग की रही। प्रारंभ से ही पढ़ाई की ओर रूचि होने के कारण साधन विशेष न होते हुए भी आपने एम.एस.सी. की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात लाहौर गर्वमेंट कॉलेज में डिमान्स्ट्रेटर के रूप में कार्य किया। गर्वमेंट कॉलेज की नोकरी छूटने के पश्चात गुरूदतजी नेशनल स्कूल में हैडमास्टर के रूप में कार्य करने लगे। उसके पश्चात गुरूदत जी अमेठी राज्य के राजकुमार कुवर रणजयसिंह के प्राईवेट सेक्रेटरी बन गए। अमेठी से सेवामुक्त होने के पश्चात लखनऊ में आयुर्वेदाचार्य पण्डित सिद्धेश्वर अवस्थी एवं आयुर्वेदाचार्य पण्डित रायनारायण मिश्र से आयुर्वेद का गहन अध्ययन किया। अध्ययन के पश्चात दो वर्ष लखनऊ में चिकित्सा में कार्य किया पर वहां पर भी संकट बना रहा। वहां से गुरूदतजी दिल्ली आए तथा वहां मद्रास होटल के नीचे चिकित्सा कार्य आरंभ किया। यहां पर कार्य में उन्नेति होती गई तथा आर्थिक स्थिति अच्छी हो गई। जीवन में आर्थिक संकट समाप्त होने के पश्चात गुरूदतजी ने लेखन कार्य प्रारंभ किया।

वैद्य गुरूदत के उपन्यासों में बीसवीं सदी का स्वातन्त्रय-संग्राम, स्वतन्त्रयोत्तर भारत का हासशील जीवन तथ निर्बल राजनीति का कुपरिणाम विचार के साथ अंकित है हिन्दुत्व की विचारधारा के पोषक गुरूदत जी का राष्ट्रीय यथार्थवाद सभी उपन्यासों में किसी न किसी रूप में देखने को मिलता है। लेकिन मुख्य रूप से राजनीतिक उपन्यासों में मूर्तिमान हो उठा है राजनीतिक क्षेत्र के अच्छे ज्ञाता होने के कारण उनके राजनीतिक उपन्यास प्रायः सफल कहे जा सकते हैं। श्री अशोक कौशिक के मतानुसार – ''प्रारंभ में उन्हें क्रांतिकारियों का संपर्क सुलभ रहा, वहां भी वे सक्रिय रहे। जब उनका संबंध कांग्रेस से हुआ तो वहां भी उन्होंने उसी लगन से कार्य किया। हिन्दू महासभा भी उनका कार्यक्षेत्र रही है। कम्यूनिस्टों के कारनामें उन्होंने निकट से देखे हैं जब मनुष्य की आयु में प्रौढ़ता आती है तो उसके विचारों में भी वैसी ही प्रौढ़ता आ जाती है। जीवन में उन स्वर्णिम क्षणों में गुरूदत जी का संबंध राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और बाद में जनसंघ से बना। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वे प्रबल संपर्क में रहे हैं और जनसंघ के आधारभूत संस्थापकों में वे अग्रणी हैं। जनसंघ की स्थापना में उनका जो योगदान रहा है वह अतुलनीय है।''

गुरूदत ने क्रांतिकारियों को केंद्र में रखकर न कोई उपन्यास लिखा और न ही कम्युनिस्टों को लेकर। उनके प्रायः राजनीतिक उपन्यासों का मुख्य आधार कांग्रेस की कटु आलोचना कर हिन्दू भावना को प्रोत्साहन देना ही है। सन् १९४३ की राजनीतिक जागृति तथा सन् १९४२ को भारत छोड़ो का अंतिम नारा आदि घटनाओं से गुरूदत जी का संबंध रहा है। इनकी विचारधारा हिन्दुत्ववादी है।

भारतीयों और अंग्रेजों के बीच होने वाले गर्म और नरम संघर्षों को अपनी आंखों से देखा है। अंग्रेजों के दमन चक्र, अत्याचारों और अनीतिपूर्ण आचरण को स्वयं गर्मदल के सदस्यों के रूप में अनुभव किया और लाहौर में रहकर डायरेक्ट-एक्शन का सामना किया है। लेखक ने राजनैतिक उपन्यासों में घटनाओं के तारतम्य का निष्पक्ष चित्रण करते हुए, जनता पर उसके स्वभाविक प्रभाव तथा अपने मन की प्रतिक्रियाओं का अंकन किया है। यहां पर क्रमशः स्वाधीनता के पथ पर, पथिक स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दासता के नए रूप आदि उपन्यासों का विश्लेषण करने का प्रयास है।

'स्वाधीनता के पथ पर' उपन्यास 1920 से 1930

'स्वाधीनता के पथ पर' उपन्यास में सन् १९२० से १९३० तक की राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। इसकी रचना सन् १९४२ में की गई। कांग्रेस में गरम और नरम, हिंसक और अहिंसक दोनों दलों की मीमांसा की गई है। दोनों में वास्तविक मार्ग कौन सा है इसकी ओर संकेत किया गया। अंग्रेजों का जनता पर अत्याचार, निरपराधियों को दण्ड आदि घटनाओं का वर्णन किया गया है। सन् १९२१ के असहयोग-आंदोलन के असफल होने पर देश में स्थान-स्थान पर हिंसात्मक क्रांतिकारी दल बन गए। सन् १९३० के सत्याग्रह

आंदोलन और क्रांतिकारी दलों से प्रतिपादित हिंसात्मक प्रकृति में संघर्ष चल पड़ा। इसी संघर्ष की यह कथा है।

क्रांतिकारी दल अंग्रेजों की गलत नीतियों का विरोध कर रहे थे साथ ही उनका साथ देने वाले लोगों को भी भारत के विरोधी के रूप में देख रहे थे इसका वर्णन पूर्णिमा व मधुसूदन की वार्ता के माध्यम से उपन्यासकार ने किया है। मधुसूदन पूर्णिमा को बताता है कि वह नरोत्तम के क्रांतिकारी दल में शामिल होने की बात जानता है। इसका प्रमाण देता हुआ कहता है।

''एक रात मैं थका हुआ था। नरोतम भैया से मिलने गया। वह बैठक में नहीं थे। मैं उनकी प्रतिक्षा में मैं एक कोने में बैठ गया। सर्दी बहुत अधिक थी, चादर जो ओढ़कर बैठा तो नींद आ गई। मुझे नहीं मालूम कब तक सोया रहा। धीरे-धीरे में चैतन्य होने लगा। इसके साथ ही कानों में किसी के बातें करने की झनझनाहट आने लगी। कोई कह रहा था, 'इलाहाबाद के कलक्टर ने तो अंधेरे मचा रखा है। उसके सबक सिखाना चाहिए। अगली पूर्णिमा को उसके यहां नाच और दावत होगी। बस, दवाई की पांच खुराकें उसके लिए भेजनी चाहिए। नाच के समय ही ठीक रहेगा।'

''इसके उत्तर में नरोत्तम कहा रहा था, परंतु भीड़ में तो अपराधी और निरपराधी में भेदभाव नहीं हो सकता।''

''वही आवाज फिर बोल उठी, 'अपराधी के जलसों में सम्मिलित होने वाले निरपराधी नहीं होते। सब लोग कलक्टर के अन्याय से लंग हैं, फिर भी उसके निमंत्रण पर उनमें से सैंकड़ों वहां जाएंगे। वे लोग कोई धर्म कार्य करने नहीं जाएंगे। न ही वे नाच-कला को समझते होंगे। वे तो साहब की खुशामद करने के लिए वहां पहुंचेंगे।'[१]

हिंसा व अहिंसा दोनों की विस्तृत चर्चा करते हुए वास्तविक मार्ग की ओर लेखक ने संकेत किया है। क्रांतिकारी दल में व्याभिचार एवं विषय वासना का साम्राज्य था। हिंसा के मार्ग पर न चलने की सलाह जब मधुसूदन पूर्णिमा को देता है और इस दल से अलग होने को कहता है तो वह कहती है - 'आप मुझे ऐसा क्यों कहते हैं? मैं तो मशीन का एक पुर्जा हूं। बिना सारी की सारी मशीन काा सुधार किए मुझे अलग करने से क्या होगा? मान लो मैं अलग हो भी जाऊं तो क्या इससे पार्टी टूट जाएगी? हत्याएं तो होती ही रहेंगी।''[२] क्रांतिकारी दलों में कुछ सदस्य ऐसे भी शामिल हो गए थे जो पार्टी के हित में कार्य नहीं कर रहे थे बल्कि वह देश भक्ति की ओट में गुलछर्रे उड़ा रहे थे उपन्यास में कमल नाम का पात्र ऐसा ही था। जिसने धीरेंद्र को पत्र लिखा था जिससे पार्टी में फैले व्याभिचार का पता चलता है। नरोत्तम ने पत्र पढ़ना आरंभ किया। लिखा था -

''दादा धीरेंद्र!

मैं यह भली-भांति जान गया हूं कि पार्टी में देश-भक्ति की ओट में गुलछर्रे उड़ाए जा रहे हैं। पार्टी में लड़कियों के होने से बहुत से सदस्य व्यभिचार और विषय-वासना में फंस गए हैं। इस अवस्था के पैदा होने में सबसे अधिक दोष तुम्हारा है। तुमने सबसे पहले तपस्विनी से संबंध उत्पन्न कर उसे पतित किया। अब तुम्हारी दृष्टि पूर्णिमा पर है तुम पार्टी का बहुत धन इन लड़कियों पर खर्च कर देते हो और इस विषय लोलुपता में फंसे हुए पार्टी के काम को भूल रहे हो। अतएव, मेरा और मेरे जैसे विचार के और लोगों का भी यह कहना है कि तुम पार्टी के नेतृत्व से त्यागपत्र दे दो ताकि पार्टी में संशोधन हो सके। यदि तुमने स्वयं ऐसा न किया तो मुझे ये सब बातें पार्टी में रखनी होगी। आज यह सब कुछ हो जाना चाहिए।''[३]

महात्मागांधी के अहिंसात्मक आंदोलन का विरोध करते हुए सेठ साहब मिस्टर चक से बोले, क्या आपने विरोधियों से असहयोग करने के लिए महात्मा गांधी की आज्ञा की जरूरत है। महात्मा गांधी का असहयोग केवल नीति थी। मेरे लिए अपने विरोधियों से असहयोग धर्म है, नीति नहीं है। नीति बदल सकती है, धर्म नहीं बदलता। यह सहयोग में बदल सकता है यदि विरोधी का विरोध भी प्रेम में बदल जाए।''[४]

अतः इस उपन्यास में स्वाधीनता आंदोलन की ऐतिहासिक व वास्तविक भूमिका इस कृति के अंतर्गत प्रस्तुत की गई हैं गुरूदत ने साहित्य क्षेत्र का पहला राजनीतिक उपन्यास लिखा और ये उन्हें साहित्य के क्षेत्र में उच्च स्थान पर पहुंचाने में सफल हुआ। हिंसात्मक-अहिंसात्मक उपायों का निष्पक्ष भाव से प्रकाश डालने का प्रयास इस कृति में किया गया है और इस प्रकार से गांधी जी के असहयोग आंदोलन और अहिंसा की नीति को अनुपयुक्त ठहराया गया है। इसमें राजनीतिक गतिविधियों का चित्रण किया गया है।

पथिक 1935 से 1940

वैद्य गुरूदत के प्रायः राजनीतिक उपन्यास सरकार द्वारा जब्त हैं उनमें से 'पथिक' एक है 'पथिक' उपन्यास पर ७ दिसम्बर १९४८ में चीफ कमिश्नर देहली द्वारा प्रतिबंध लगाया गया था। ३ दिसम्बर १९४९ में यह प्रतिबंध एक शर्त पर उठा लिया गया कि पुस्तक की भूमिका 'प्रस्तुत विषय' जो चार पृष्ठ का था जब्त रखा जाए।''[५]

'स्वाधीनता के पथ पर' उपन्यास की सफलता से उत्साहित लेखक ने दूसरे उपन्यास की पृष्ठभूमि को राजनैतिक रखा। सन् १९४३ में लिखा गया यह एक बहुत प्रचलित राजनीतिक उपन्यास है। यह सन् १९३५ से १९४० तक की राजनैतिक परिस्थिति पर आधारित है। हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर स्वतंत्रता से लिखा गया यह उपन्यास हिन्दी साहित्य में अनमोल रत्न के समान है।

स्वाधीनता पथ पर चलता हुआ मधुसूदन गांधीवाद, सत्याग्रह, साम्यवाद, आतंकवाद इत्यादि की प्रचण्ड लहरों के अलोड़न-विलोड़न को देखता और स्वयं भी उसमें पढ़कर संघर्ष की प्रचण्ड थपेड़ों द्वारा पूर्णिमा की मृत्युरूपी कठोर चट्टान पर गिरकर विक्षिप्त हो गया था। वही व्यक्ति 'पथिक' के उपनाम से फिर कार्यक्षेत्र में राजनीतिक जागरण पैदा करना चाहता है। इस कृति में वर्तमान शिक्षा का राजनीति से संबंध किस प्रकार होता है। इस ओर संकेत करने का प्रयास किया गया है। स्वयं पथिक 'विद्यार्थी संघ' के गठन की चर्चा करते हुए एक स्थान पर कहता है, ''इसमें शोक करने की बात नहीं है हम इस आयोजन को बिना

फैडरेशन की सहायता से ही चला लेंगे। मेरा यहां आना सफल हुआ है मेरा में संबंध प्रायः सब बड़े-बड़े कॉलेजों के विद्यार्थियों से हो गया है। मैंने प्रत्येक स्थान के लिए एक-एक, दो-दो कार्यकर्ता नियत कर दिए हैं। अब इस काम को आगे चलाने के लिए चुपचाप कॉलेजों में काम करना है। मैं चाहता हूं कि इस संस्था के शीघ्रतिशीघ्र दस हजार सदस्य बन पाएं। काम न तो कानून के खिलाफ हैं, न ही बहुत कठिन। प्रचार करने की बातें सत्य-सत्य ऐतिहासिक घटनाओं से संबंध रखने वाली होंगी। किसी देश के लोगों में स्वतंत्र होने की भावना उत्पन्न करना कानून के विपरीत नहीं है। लोगों को यह बताना कि किन दोषों के कारण वे परतंत्र हैं, पाप नहीं हैं। बस, यही बताने के लिए मेरी योजना है। खर्च का सब प्रबंध है। किसी को कुछ भी खर्च नहीं करना होगा।'' वह विद्यार्थियों की राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना कर छात्र-छात्राओं को राजनीतिक प्रशिक्षण देना चाहता है, उन्हें सक्रिय राजनीति का भाग बनाना नहीं चाहता।[६]

अंग्रेजों द्वारा मुसलमानों की विशेष हक दिए जाने, जातीय आधार पर बांटने का कार्य कर रही थी उन्हें विशेषाधिकार दिए जा रहे थे। पथिक व सलीमा के संवाद इसे बताते हैं।

'हां, जब मुसलमान यह कहते हैं कि एक मुसलमान को नौकरी प्राप्त करने में या दूसरी बातों में विशेष अधिकार मिलने चाहिए तो यह एक हिन्दुस्तानी से अधिक अधिकार ही तो हुए। मुसलमानों के अतिरिक्त दूसरे मत वालों को यदि कोई स्थान बी.ए. पास करने पर नहीं मिल सकता और वही स्थान मुसलमानों को कम शिक्षा प्राप्त करने में मिल जाता है। तो यह हक से अधिक मिलना नहीं है क्या?''[७]

'तो आपका मतलब है कि नौकरियों में अथवा कमेटियों में विशेष मताधिकार जो मुसलमानों को प्राप्त हो गया है यह उनको अपने हक से ज्यादा मिला है। 'हां, मैं तो यही समझता हूं सरकार ने ये अधिकार दे दिए हैं। देखो न, आम लोगों के लिए एक आदमी को प्रांतीय धारा सभा का सदस्य चुनने के लिए जो योग्यता चाहिए उससे कम योग्यता वाले मुसलमान को सदस्य चुनने का हक है। यह एक हिन्दुस्तानी से बढ़कर हक तो है ही। सरकार ने इस बेइन्साफी इसलिए की ताकि मुसलमान मजहब के नाम पर हक मांगने को इंसाफ समझने लगें और हिन्दुओं से उनकी न पटे।[८]

'पथिक' उपन्यास में नवयुवकों के प्रति नवचेतना का आहवान है। हिन्दू-मुस्लिम दंगे कृत्रिम थे उन्हें रोका भी जा सकता था परंतु ऐसा नहीं को सका। फलस्वरूप अनेक लोग शिकार बने। नायिका सलीमा राष्ट्रसेवी विद्यार्थी संघ की सक्रिय सदस्या बन जाती है। हिन्दुसतान में नीजि बातों पर हो रहे कौमी बलवे, बीस पच्चीस रूपए की नौकरी के लिए अपने ही सगों पर अन्याय और अत्याचार मजहबी जुनून के लिए बाप सगे लड़के का खून करवा सकता है। अथवा लड़की को विधवा बना सकता है।

अतः कुल मिलाकर इस उपन्यास में उपन्यासकार ने महात्मा गांधी की अहिंसावादी नीति की आलोचना की है। अहिंसा का हथियार कोई विशेष सफल नहीं हुआ। क्योंकि मुसलमानों के विरोध में कांग्रेस को प्रायः झुक जाना पड़ता था।

स्वराज्य–दान 1942 से 1947

'स्वराज्य-दान' उपन्यास की पृष्ठभूमि में सन् १९४२ से १९४७ तक का भारतवर्ष है यह वह समय था जब विश्व-व्यापी युद्ध चल रहा था। नगर पर नगर बमों के गिरने से जल रहे थे। सौ-सौ टन के टैंक का उपयोग मनुष्य संहार के लिए होता था। नर रक्त का मूल्य जल से भी कम हो गया था। ऐसी स्थिति में भारत की जनता में देश में देश को स्वतंत्र करने की इच्छा जागृत हो यह स्वाभाविक था। हिन्दू के इस नर रक्त को रोकने के लिए यदि भारतवर्ष ने सशक्त क्रांति की योजना बनाई तो आश्चर्य में पड़ने की क्या बात है? गुरूदत की यह सफल क्रांति के प्रति अपना दृष्टिकोण व्यक्त करती है स्वराज्य कैसे मिला? यह लेखक के शब्दों में एक समस्या है। इस उपन्यास का कथा-सूत्र अमृतसर के जलियांवाला बाग के हत्याकांड से लेकर १५ अगस्त १९४७ के स्वतंत्रता दिन तक फैला हुआ है।

१३ अप्रैल १९१९ ई. को जलियांवाला बाग अमृतसर में ऐसा नृशंस हत्याकांड हुआ जिसने न केवल भारतीयों अपितु विश्व के न्यायप्रिय लोगों के दिलों को हिलाकर रख दिया था। जलियांवाला बाग में १५-२० हजार लोग एकत्र हुए थ। अचानक जनरल डायर अपने १५० सैनिकों तथा मशीनगनों सहित वहां आ गया और गोलियों की बौछार कर दी। कुछ ही क्षणों में जलियांवाला बाग भारतीयों के रक्त से लाल हो गया। 'स्वराज-दान' उपन्यास में उपन्यासकार नरेंद्र के चाचा द्वारा मां के साथ जलियांवाला बाग में हुई घटना को इस प्रकार वर्णित किया। 'जलियांवाले अहाते में जाने के दो मार्ग है एक बड़ा फाटक सा है, और दूसरे को तो केवल खिड़की ही कहना चाहिए। मैं फाटक के मार्ग से भीतर गई थी। सामने हाय-हाय मची हुई थी। हजारों लोगों के मुख से आर्तनाद निकल रहा था। कोई-कोई बिरला उसमें खड़ा अपने किसी संबंधी को पहचान रहा था। ये, अपने संबंधियों को ढूंढने वाले, कभी-कभी शवों की घसीटकर इधर-उधर करते थे। कभी कोई पानी मांगता तो सुनने वाले सिवाय दुःख अनुभव करने के और कुछ नहीं कर सकते थे। सूर्यास्त होने में कुछ ही मिनट रह गए थे और ढूंढने वाले अनुभव कर रहे थे कि शीघ्र ही उनको लौट जाना है। सूर्यास्त के बाद शव ले जाना तो एक तरफा रहा, उनका घर पहुंचना भी भय रहित नहीं रह जाएगा।[९]

उपन्यास में अत्युत्तम कोटि का वातावरण निरूपण किया गया है यों तो गुरूदत के उपन्यासों में वातावरण चित्रण करने में उसके द्वारा किए गए जीवन में गूढ़-अध्ययानुभव सहायक हुए हैं तथापि यह उपन्यास इस क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त कहा जा सकता है। पार्वत्य उपत्यकाओं, दुर्गम मार्गी, क्रांतिकारियों के भूगर्भ वास के लिए उपयुक्त स्थानों, जेल की अमानवीय कोठरियों आदि के वर्णन के साथ पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली के प्रत्यक्ष वातावरण के चित्र गुरूदत ने सफलतापूर्वक अंकित किए हैं। उदाहरणस्वरूप इस प्रकार है - ''झाड़ियां इतनी घनी थी कि उनसे गुजरना कठिन था। पग-पग पर खच्चर अटक जाते थे और उनके लिए झाड़ियों की शाखाएं काटकर मार्ग बनाना पड़ता ाि। घटी के तल पर अति स्वच्छ और बर्फ समान ठंडे जल की छोटी सी नदी वह रही थी। यह जल वेग से बहता हुआ घोर नाद कर रहा था और यह नाद चारों ओर खड़े पर्वतों से टकराकर प्रतिध्वनित हो रहा था। सूर्य किरण

वेग से उछलते-कूदते जल की तरंगों पर पड़कर इंद्रधनुष बना रही थी। यह स्थान शंकर पंडित को अति लुभायमान प्रतीत हुआ और उसने इसी नदी के किनारे रातभर के लिए डेरा डालने का निश्चय कर लिया। पहाड़ी में सामान खच्चरों से उतार खेमा लगाने लगे और शंकर पंडित नदी किनारे बैठ जेब से मानचित्र निकाल प्राचीन पुस्तक का अनुवाद पढ़ने लगे। साथ-साथ्ज्ञ मानचित्र भी देखता जाता था।[९०]

अतः गुरूदत की कांग्रेस विरोधी राजनीतिक चेतना स्वराज्य प्राप्ति के लिए गांधी जी के असहयोग आंदोलन को बिल्कुल श्रेय देने के पक्ष में नहीं है तथा दूसरी ओर वह आतंकवादी क्रांतिकारियों के प्रयासों का समर्थन करती हुई दृष्टिगोचर होती है। अतः यह उपन्यास समसामयिक राजनीतिक घटनाओं का अंकलन अवश्य करता है। किंतु उसमें प्रस्तुत राजनीतिक विश्लेषण पूर्वग्रह से रहित नहीं कहा जा सकता है। वैसे यह स्वाभाविक भी है कि यदि लेखक की निष्ठा किसी राजनीतिक विचारधारा से जुड़ी हुई हो तो उसका प्रभाव कृति में दिखाई देता है।

विश्वासघात 1945 से 1947

'विश्वासघात' उपन्यास १९४५ से १९४७ की राजनीतिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखा गया है इसमें बंगाल की मुस्लिम लीग सरकार के हिन्दुओं पर अत्याचार की कहानी है 'पाकिस्तान बन नहीं सकता' ऐसे सूत्रोच्चर करने वाले कांग्रेस दल ने पाकिस्तान स्वीकार कर लिया। विभाजन स्वीकार कर लिया गया परंतु लाखों हिंदू मारे गए और लाखों बेघर हो गए। इस पर ध्यान नहीं दिया गया। कलकत्ता और नौआखली काण्ड पर आधारित यह उपन्यास हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों की अन्यतम उपलब्धि है इस कृति में भारत विभाजन की पृष्ठभूमि नेतृत्व की निर्बलता, मुस्लिम लीग के भीष्ण षडयंत्र एवं विध्वंस यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है।

कांग्रेस आरंभ से ही अंग्रेजों के बुने वैचारिक जाल में फंस गई। अंग्रेजों का कहना था कि कांग्रेस एक राष्ट्रीय संस्था कहलाने का दावा तभी कर सकती है जब इस देश के भिन्न-भिनन संप्रदायों को मानने वाले सभी समुदाय उसके मंच पर आ जाए। अंग्रेज सरकार तभी उसे समस्त भारतीयों का प्रतिनिधि मानेगी और उसकी मांगों पर विचार करेगी। चुनावों में कांग्रेस की जीत होती है तो चेतन के पिता इसे जीत नहीं मानता बल्कि हार मानता है वह कहता है, 'देखो चेतन! कांग्रेस की स्थापना ही इस सिद्धांत पर हुई थी कि इस देश में हिंदू-मुसलमान और अन्य मत-मतान्तरों के लोग एक ही जाति के अंग हैं। इस जाति का नाम कांग्रेस ने 'हिन्दुस्तानी कौम' रखा था। साठ वर्ष के निरंतर प्रचार और घोषणाओं के पश्चात भी मुसलमानों ने यह निर्विवाद सत्य प्रकट कर दिया है कि वे हिंदुओं तथा अन्य मत के लोगों से एक पृथव जाति है उन्होंने मुस्लिम लीग की जो मुसलमानों को एक पृथक जाति मानती है और उनके लिए एक पृथक देश की मांग कर रही है, ९६ प्रतिशत मत दिए हैं।''[९१]

चेतनानन्द महात्मा गांधी व कांग्रेस की राजनीतिक गतिविधियों को देखकर पार्टी से त्याग पत्र दे देता है और ये मानना है कि सच्चाई जान लेने के बाद न तो मैं कांग्रेस सरकार से सहयोग कर सकता हूं न बंगाल की मुस्लिम सरकार से। चेतनानन्द कहता है ''मैं समझता था कि हिन्दू मुस्लिम एक ही जाति हैं परंतु कलकता, नोआखाली और बम्बई के झगड़ों को देख मेरा भ्रम दूर हो गया है। इच्छित लक्ष्य और वस्तु स्थिति में अंतर दिखाई देने लगा है।

''मैं समझता था कि कांग्रेस राष्ट्रीय संस्था है। आज मेरा यह स्वप्न भी भंग हुआ है और मुझको दिखाई देने लगा है कि कांग्रेस एक सम्प्रदाय बन गया है इस सम्प्रदाय के गुरू, पीर, मुर्शिद, महात्मा गांधी है और उन पर सम्प्रदाय के लोगों की अगाध श्रद्धा है यह कांग्रेसी सम्प्रदाय हिन्दू विरोधी और मुस्लिम परस्त है।''[९२]

अतः हिन्दू-मुस्लिम दंगे फसादों का सजीव चित्रण इस उपन्यास में किया गया है देश की राजनीतिक परिस्थिति का वास्तविक चित्रण गुरूदत की अद्भुत लेखनी का कमाल है बंगाल की सुहराबर्दी सरकार तथा डायरेक्ट एक्शन के नाम से वहां हिंदुओं पर किए गए भयंकर अत्याचारों की कहानी है। देश विभाजन हो गया तो मुसलमान देश छोड़कर पाकिस्तान जा रहे थे। उस समय मुस्लिम भक्त हुआ। हृदय ने भरसक प्रयत्न किए कि मुसलमान इस देश में ही रहें। विभाजन के समय कुछ हिन्दू पाकिस्तान में ही रह गए। न तो गांधी ने उनको हिन्दुस्तान में लाने का प्रयास किया और न ही उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई, न तो उनको मुसलमानों के बराबर का अधिकार दिलवाने का प्रयत्न किया गया। इस उपन्यास में राजनीतिक सूझ-बूझ लेखक की, राजनीति की समझ, वर्तमान स्थितियां आदि तभी स्पष्ट रूप से संकेतित होती हैं।

'देश की हत्या' 1947 से 1948

यह 'विश्वपासघात' का पूरक उपन्यास है भारत विभाजन के समय की पृष्ठभूमि पर आधारित कृति में हिन्दू-मुलिम एकता के निष्पक्ष प्रयास एवं कांग्रेसी नेताओं द्वारा मुस्लिमलीगियों के सम्मुख झुककर भारत का विभाजन स्वीकार करने का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। १९४७ से १९४८ की राजनीतिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर यह उपन्यास लिखा गया है। इस उपन्यास के प्रकाशित होते ही शासन चक्र की कुदृष्टि इस पर पड़ी एवं इसे 'भारत रक्षा कानून के अंतर्गत अवैध घोषित कर दिया गया, साथ ही सारी प्रतियां जब्त करने का आदेश निकाला गया। जब न्यायालय में इसके विरूद्ध रिट याचिका दायर की एवं शासन से 'देश की हत्या' पर लगे प्रतिबंध को उठाने की मांग की तो शासन ने बताया कि इस उपन्यास से हिंदू-मुस्लिम भ्राता भावना का ठेस पहुंचती है तथा इस उपन्यास में अप्रत्यक्ष रूप से गांधी-हत्या का समर्थन किया गया है, अन्य कृतियां 'स्वराज्य-दान' विश्वासघात पर भी प्रतिबंध लगा दिया। परंतु अन्त में शासन चक्र को अपनी भूल का एहसास हुआ एवं उसने इस पुस्तक से प्रतिबंध हटा लिया।''

मुस्लिम नेशनल गार्डस जब देश में साम्प्रदायिकता फैला रहे थे और जुलूस निकाल रहे, तो कांग्रेस सरकार ने इन्हें रोकने के लिए कुछ नहीं किया, बल्कि वह हिन्दुओं को ही दोषी ठहरा रहे थे। कलकता व नोआरवाली में डायरेक्ट एक्शन के कारण भयंकर

घटनाएं हो चुकी थी। बंगाल में मुस्लिम लीग के नेता गुप्त कान्फैंस कर रहे थे। पाकिस्तान बनाने की पूर्ण कोशिश की जा रही थी, तो कांग्रेस नेता फिर भी लोगों को शांति का संदेश दे रहे थे, लेकिन अधिकतर जनता देश में आने वाले संकट से भयभीत हो चुकी थी और पंजाब आदि इलाकों में जब डायरेक्ट-एक्शन शुरू हुआ, तो लोग दूसरे स्थानों पर भागने शुरू हो गए। कुछ हिन्दू लोग अपनी जानमाल बचाने के लिए मुसलमान बन जाने को तैयार हो जाते हैं, ताकि उनकी जानमाल को मुस्लिम लोग हानि न पहुंचाए। 'हम सब मुसलमान हो जावें। हमारी योग्यता और शिक्षा का ध्यान रखकर, मुस्लिम लीग हमारी सेवाओं को स्वीकार करेगी। हम तो पहले ही न हिन्दू है न मुस्लमान। हमारे विचार ऐसे हैं जो किसी मजहब के नहीं माने जा सकते। इससे यदि मुसलमान बनने से हम जीवन को सुखमय बना सके तो क्या हानि है।''[९३]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोगों ने भारतीय जनता को आत्मरक्षा का पाठ पढ़ाया, जब विभाजन की पूर्व संध्या पर स्थिति बड़ी गंभीर हो गई। चारों ओर हिन्दू-मुस्लिम हत्याओं का बोलबाला था और उस समय सारी विधि व्यवस्था भंग हो गई थी। इसका प्रयोग हिन्दू न सिखों के दमन के लिए किया गया तो राष्ट्रीय स्वयं सेवकों के अनेक लोगों ने अपनी लाठी का प्रयोग अग्नि अस्त्र की तरह किया। 'देश की हत्या' उपन्यास में लेखक ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं को वीरता का वर्णन इस प्रकार किया है।[९४]

''रामचंद्र राव भी इस युद्ध के लिए लाठी लिए उपस्थित था। उसने आज लाठी चलाने में अपनी योग्यता का परिचय दिया। सबसे आगे वह ही था, ज बवह मुसलमान आक्रमणकारियों में लाठी घूमता हुआ पहंचा, तो लाठी की मार की परिधि में आना कठिन हो गया। खटाखट खोपड़ियां फटने लगी और आक्रमणकारी धराशायी होने लगे। केवल रामचंद्र राव की लाठी ने चालीस से अधिक मुसलमानों को घाय कर भूमि पर लिटा दिया। मुसलमान पंद्रह मिनट से अधिक वहां नहीं ठहरे और सारा आग लगाने वाला समान छोड़ भाग खड़े हुए।''

हिन्दुओं ने भी पाकिस्तान न बनने देने के लिए पूर्ण रूप से प्रण लिया, लेकिन कांग्रेस सरकार ने स्वीकृति दे दी, हिन्दू युवकों ने जलूसों द्वारा विरोध किया उनका नारा था, 'दे देंगे हम अपनी जान, नहीं बनने देंगे पाकिस्तान''[९५]

कांग्रेस नेताओं की सबसे बड़ी भूल यह थी कि वे भारत के मुसलमानों के इस्लाम को एक शुद्ध मजहब मानते थे। यह धारणा भी असत्य निकली। भारत के मुसलमान अपने को एक जाति अर्थात राजनीतिक इकाई मानते रहे। कांग्रेस नेताओं ने स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया और इस समारोह में लोगों का उत्साह भंग न हो, इसलिए प्रथम अगस्त से लाहौर और अन्य निकटवर्ती स्थानों में हो रहे कत्लेआम का समाचार भारत में प्रकाशित होने से रोक दिया।

इस प्रकार उपन्यासकार ने भारत विभाजन को 'देश की हत्या' की संज्ञा दी है। विभाजन के समय हिन्दुओं पर किए गए अत्याचार एवं हिन्दुओं की दुर्दशा का हृदयस्पर्शी चित्रण इस उपन्यास की मुख्य विशेषता है इस उपन्यास की घटनाएं पंजाब के डायरेक्ट एक्शन में कांग्रेसी नेताओं के झूठे दिलासों सरकार की उपेक्षा की नीति तथा पश्चिमी पंजाब से हिन्दुओं को निकालने की दर्द भरी कहानी है। शरणार्थियों की मानसिक प्रतिक्रिया तथा प्रतिकार की भावना की भड़कती ज्वाला का चित्रण किया गया है इसी बदले की भावना ने महात्मा गांधी की भी हत्या कर दी।

इस उपन्यास में बखूबी परिस्थितियों एवं 'देश की हत्या' को प्रस्तुत किया है। यह एक सफल उपन्यास है।

दासता के नए रूप 1950 से 1955

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लिखा गया यह उपन्यास १९५० से १९५५ तक की घटनाओं पर आधारित है। कांग्रेस दल एवं साम्यवादी गतिविधियां जो कि प्रगतिवाद के नाम पर की जा रही है, देश को किस विनाश की ओर ले जाएगी। इसका सही मूल्यांकन इस कृति में किया गया है। कांग्रेस की दूषित नीति के कारण ही इस देश में कौमवाद ने जन्म लिया है जिससे समय-समय पर हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते हैं। कांग्रेस का मुसलमानों को विशेषाधिकार देना, उनकी प्रत्येक बात शांति से सुनना, आदि घटनाओं को प्रसंगोत्पादक चित्रण किया है। पंडित जवाहरलाल नेहरू के समय में ही कांग्रेस ने चुनावों में हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों को सहयोग अधिक दिया। मुस्लिम जाति अपने संरक्षण के लिए अनेक साधनों का उपयोग करते हुए भी वर्तमान की मौन नीति को जनता के लिए उभारा गया है। एक हिन्दू कांग्रेसियों से ठुकराए जाने पर भी इनको ही नेता मानना है जबकि बेवफा मुसलमान ऐसा करने में असमर्थ हैं जब तक अपना स्वार्थ होता है तब तक दुश्मन की प्रशंसा करना वे नहीं भूलते हैं।

भारतीय नेता भारत के विभाजन के लिए तैयार नहीं थे। महात्मा गांधी का कहना था कि 'यदि देश का विभाजन हुआ तो मेरे शव पर होगा।' लेकिन बाद में वे सहमत हो गए कि इससे मुसलमानों, सिक्खों और हिन्दुओं की भड़की हुई भावनाएं शांत हो जाएगी। परंतु इसका अनुमान गलत निकला। पाकिस्तान में मुसलमानों ने हिंदुओं तथा सिक्खों की निर्मम हत्याएं आरंभ कर दी, उनकी सम्पत्ति लूट ली गई। उनकी बहु-बेटियों के साथ जो निर्लज्ज व्यवहार किया गया वह शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। गुरूदत के शब्दों में 'भारत सरकार ने महात्मा जी से, जो अभी तक कलकत्ता में पाकिस्तान सरकार से पाकिस्तान जाने की स्वीकृति की प्रतिक्षा कर रहे थे, सहायता मांगी कि वे आकर हिंदुओं से मुसलमानों की रक्षा करें अर्थात् झगड़ा शांत करावें। महात्मा जी पूर्वी पाकिस्तान में हिंदुओं की रक्षा का विचार छोड़कर मुसलमानों की रक्षा के लिए दिल्ली चले आए। वे ११ सितम्बर को दिल्ली पहुंचे।''[९६]

भारत देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद भी भारतीयों की मानसिक दासता को शांति नहीं मिली। उपन्यासकार गुरूदत लिखते हैं कि, 'जनता तो दास की दासी ही है केवल शासक बदल गए हैं। किसी काल के राजा महाराजाओं के स्थान में, किसी काल के धनी-मानी जमींदारों के स्थान पर अथवा किसी काल के वायसरायों, कमिशनरों और डिप्टी-कमिशनरों के स्थान पर आज राजनीतिक नेता आसीन हो गए हैं। जनता तो वैसी की वैसी ही दासता में जकड़ी पड़ी है।' अतः 'दासता के नए रूप' नामक उपन्यास में उपन्यासकार ने गांधीवादी दृष्टिकोण का अंधानुकरण कांग्रेस की नीति का सबसे बड़ा दोष है।

महात्मा गांधी के सिद्धांतों का पालन करना आज कांग्रेस के लिए ही नहीं देश की जनता के लिए भी असंभव है। गांधी जी

की विचारशक्ति श्रेष्ठ थी। शासन में छल, कपट, मुक्ति बल का स्थान नहीं होना चाहिए ऐसा वे मानते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए चल रहा उनका आंदोलन जरूरत से ज्यादा धीमी गति से चल रहा था। हिंसा और रक्तचाप से उनका हृदय द्रवित हो जाता था। सामान्य रक्तचाप होने से भी वे आंदोलन को बंद करने की आज्ञा दे देते थे। बदलती हुई परिस्थिति में गांधी जी का अहिंसात्मक आंदोलन सफल नहीं हो सकता था इसलिए तो उनके तीन-तीन आंदोलन असफल रहे।

भारत को स्वतंत्रता मिलने के इतने वर्षों बाद भी समय-समय पर पाकिस्तान का आक्रमण होता रहता है, जिससे भारतीयों की मानसिक शांति को आघात पहुंचाता है। उपन्यासकार का कथन है कि यद्यपि भारतवासी अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो गए हैं किंतु वे किसी न किसी रूप में सत्ता के दास ही है।

गुरूदत के इस उपन्यास में राजनीति का स्पष्ट लेखा-जोखा एवं समाज में व्याप्त सोच का, धारणा का चित्रण है जो स्पष्ट एवं गहरे अनुभव का परिणाम है। इसलिए यह उपन्यास महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१ गुरूदत, स्वाधीनता के पथ पर, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली,१९४२, पृष्ठ १८
२ गुरूदत, स्वाधीनता के पथ पर, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४२, पृष्ठ १२३
३ गुरूदत, स्वाधीनता के पथ पर, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४२, पृष्ठ ४८
४ गुरूदत, स्वाधीनता के पथ पर, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४२, पृष्ठ १९७
५ गुरूदत, पथिक,हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४५, पृष्ठ ३
६ गुरूदत, पथिक,हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४५, पृष्ठ १८०
७ गुरूदत, पथिक,हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४५, पृष्ठ १८४
८ गुरूदत, पथिक,हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४५, पृष्ठ १८३
९ गुरूदत, स्वराजय दान, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४८, पृष्ठ ३
१० गुरूदत, स्वराजय दान, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४८, पृष्ठ १८१
११ गुरूदत, विश्वासघात, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४९, पृष्ठ ८८
१२ गुरूदत, विश्वासघात, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९४९, पृष्ठ ७४
१३ गुरूदत, देश की हत्या, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९५१, पृष्ठ ३६
१४ गुरूदत, देश की हत्या, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९५१, पृष्ठ ९८
१५ गुरूदत, देश की हत्या, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९५१, पृष्ठ ९९
१६ गुरूदत, देश की हत्या, हिन्दी सहित्य सदन, नई दिल्ली, १९५१, पृष्ठ २०

Dr. Pinki Devi
VPO Salouni, Teh Barsar , Hamirpur.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com